विकासशील देशों में वैश्वीकरण एवं महिलाएं

दीपांजली
शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग,
बी०एच०यू०, वाराणसी

सारांश :–

वैश्वीकरण एक मिश्रित प्रक्रिया है। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है। भारत में वैश्वीकरण का प्रारम्भ 1991 में हुआ था। इसमें संचार के प्रोद्योगिकी में समकालीन क्रांति, कार्य की बढती हुई गतिशीलता, कार्मिकों के उत्प्रवास अंत में सांस्कृतिक संपर्कों को बढाने वाला उदीयमान डायस्फोरा आदि सम्मिलित है। वैश्विकारण के इस दौर में आज महिलायें अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गयी हैं। परिवर्तन एवं संचार साधनों में तीव्र विकास से भी महिलाओं में ज्यादा जागरूकता आई है। आज महिलाओं ने अपने विकास के लिए विभिन्न समीतियां भी बना ली हैं। महिलायें हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ–साथ काम कर रही हैं। भारत एवं विश्व में नारी प्रस्थिति के विभिन्न सूचकों का प्रयोग किया जाता है। आकलन जननान्कीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक आदि आधारों पर किया जाता है। वैश्वीकरण के द्वारा भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक संरचना में परिवर्तनों के साथ बदलती रही है ।

इस नए वैश्विक युग में महिलाओं के आंदोलनों को भी विशाल लोकतान्त्रिक ढांचे के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार तथा मूलभूत आर्थिक अधिकारों जैसे मुद्दों के साथ जोड़ा गया है।

विकासशील विश्व के संदर्भ में, महिला आंदोलनों को गैर लाभान्वित तथा अल्प प्रतिनिधित्व वर्गों के सामाजिक आर्थिक अधिकारों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है जिसमें निर्धन महिलाएं भी शामिल हैं।

20वीं शताब्दी के आरम्भ में भारतीय महिलाओं का तर्क था कि लैंगिक न्याय को हासिल करने में बहुत लम्बा समय है। लेकिन फिर भी महिलाओं की शिक्षा तथा राजनीतिक कार्यवाही ने भारत के सामाजिक तथा राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया है। महिलायें अब कानून का पात्र न होकर कानून की प्रवर्तक हो गयी है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण अब महिलायें जागरूक हो चुकी हैं तथा स्थायी रूप से अब उनका दमन नही किया जा सकता।

प्रस्तावना :–

वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है। भारत में वैश्वीकरण का आरम्भ सन् 1991 में हुआ था। वैश्वीकरण एक जटिल आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया है। वैश्वीकरण राष्ट्र–राज्य की सीमाओं को लांघता है। समाजशास्त्रिय दृष्टिकोण से वैश्वीकरण की अवधारणा का विश्लेषण करने वाले सर्वप्रथम समाजशास्त्रिय Anthoni Giddens हैं। Giddens ने अपनी पुस्तक The consequences of modernity में वैश्वीकरण को परिभाषित किया है। ''विभिन्न लोगों एवं विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य बढती हुई पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है। यह पारस्परिकता सामाजिक–आर्थिक संबंधो में निहित होती है। इसमें समय व स्थान का कोई महत्त्व नहीं होता है।" रवि प्रकाश पाण्डेय के अनुसार वैश्वीकरण की प्रक्रिया समय और दूरी का राष्ट्र राज्य से आगे संकुचन उत्पन्न करती है। इसके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्वीकरण के दौर में विकासशील देशों में महिलाओं की प्रस्थिति की विवेचना की गयी है। इसके अंतर्गत बाजारों, वित्त और प्रोद्योगिकियों का एकीकरण हो रहा है। पूर्व की सभी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं की भांति यह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में घरेलु राजनीति आर्थिक नीतियों तथा सभी देशों के विदेशी संबंधो को स्वरुप प्रदान कर रहा है। आज युग बदल गया, वैश्वीकरण और बाजारवाद के चलते जीवन और परिस्थितियां बदल गई। किन्तु सवाल यह है कि स्त्री की दुनिया

कितनी बदली? बदली भी या नहीं ? और जो थोड़े से बदलाव ऊपर से दिखाई देते हैं उनके अन्दर का सच क्या है ? एक सच है कि तमाम बदलावों के बावजूद औरत यानी उपेक्षिता, यानी दोयम दर्जा। हम आधी दुनिया की इसी वस्तु समझी जाने वाली स्त्री पर विमर्श, वैश्वीकरण और मानव अधिकारों की बात करने जा रहे हैं, जिसके लिए मानवाधिकार आज भी अमृत ही है।

दरअसल हमारे समाज में पारम्परिक तौर पर यह स्थिति कभी नहीं रही कि स्त्रियों को रचनात्मक कार्यक्षेत्र में या पारिवारिक सत्ता श्रृंखला में पुरूष के बराबर का दर्जा दिया गया हो। वर्ष 2000 में बीजिंग प्लस 5 परिपत्र में 1995 में हुए संयुक्त राष्ट्र महिला सम्मेलन के बाद से हुई प्रगति का आकलन करते हुए कहा गया है कि ग्लोबलाइजेशन कुछ महिलाओं को अवसर प्रदान करता है लेकिन बहुत सी महिलाओं को हाशिये पर भी धकेलता है इसलिए समानता के लिए उन्हें मुख्यधारा में लाने की जरूरत है। ग्लोबलाइजेशन के मौजूदा परिदृश्य को देखते हुए यह स्पष्ट है कि इससे समान रूप से महिलाओं का भला होने वाला नहीं। ऐसी नीतियां बनाने की जरूरत है जो महिलाओं की कार्यक्षमता को बढ़ाने और भूमंडलीकरण के नकारात्मक सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का सामना करने के लिए उन्हें सशक्त बनाने का काम करे। भूमंडलीकरण का महिलाओं का उचित लाभ पहुंचे इसके लिए रोजगार की नीतियां को दुबारा तैयार करना होगा। ऐसे अवसरों का निर्माण करना होगा जिसमें महिलाएं विकास की प्रक्रिया में भागीदार बने। इसके लिए ग्लोबलाइजेशन की प्रक्रिया के स्वरूप को बदलने की जरूरत है ताकि महज 'लाभ' पर केंद्रित नीतियों की बजाय ऐसी नीतियां बने जो लोगों पर केंद्रित हों और महिलाओं के प्रति अधिक जवाबदेह हो ।

इस प्रक्रिया ने 'गरीबी के स्त्रीकरण' को अधिक प्रोत्साहित किया है। एक अनुमान के मुताबिक विश्व के कुल काम के घंटों में से महिलाएं दो तिहाई घंटे काम करती हैं । लेकिन विश्व की केवल दस तिहाई आय अर्जित करती हैं और विश्व की केवल एक प्रतिशत संपति की मालकिन हैं । ग्लोबलाइजेशन के चलते आर्थिक और सामाजिक स्तर पर आगे बढ़ने के रास्ते खुलने का कुछ हद तक लाभ शहरों की शिक्षित अधिकार संपन्न महिलाओं को हुआ। लेकिन यहां भी फायदा उन्हीं महिलाओं को मिला जो संगठित क्षेत्रों की कंपनियों में बेहतर कार्य शर्तों पर काम करने की स्थिति में अधिक थीं। संचार माध्यमों के विस्तार, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, मीडिया के विस्तार और विश्व स्तरीय संस्थाओं के भारत में खुलने से महिलाओं को समान अवसर और अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने का काम किया है। इस से महिलाओं के स्तर में बदलाव लाने की कुछ हद तक कोशिश भी सफल हुई। गैर सरकारी संगठनों के आने से महिलाओं में साक्षरता और वोकेशनल प्रशिक्षण का लाभ भी मिला है। लेकिन खुले बाजार से पैदा हुई उपभोक्ता संस्कृति का शिकार भी महिलाएं बनीं। इस संस्कृति ने महानगरों से लेकर छोटे शहरों की महिलाओं को महज उपभोक्ता और उत्पादक बनाने का काम अधिक किया है। ग्लोबलाइजेशन की प्रक्रिया ने विकास के नए आयाम बनाए हैं लेकिन लाभों के असमान वितरण से आर्थिक असमानता बढ़ी है।

भारत में वैश्वीकरण के दौर में महिलाएं :–

महिलाओं की स्थिति एवं भूमिका पर वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा है। मानव विकास विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण ने विकास एवं सुधार की तुलना में महिलाओं का पतन ही किया है। उदा. के लिए विश्व में भारत में लिंग अनुपात पर एक महिला स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का उपयोग कर पाती है। ज्यादातर महिलाएं असंगठित संस्थाओं में काम करती हैं और नियमहीनता के चलते शोषण का शिकार होती है। पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं पर घातक प्रभाव डाले हैं। महिलाओं का इस व्यवस्था में सदियों से शोषण होता आ रहा है। इसके अलावा कार्य करती हुई महिलाओं का जीवन स्तर पूरी तरह खराब पोषाहार व स्वास्थ्य में गिरावट के कारण प्रभावित हुआ है। इस तरह महिलाएं दोहरी शोषण का शिकार हैं।

महिला उत्पीड़न के मूल में निरक्षरता, रूढ़िवाद और अन्ध–विश्वास जैसे का तैसा है – वैश्वीकरण के चलते जो संचार क्रॉंति आई है उसने कम से कम हमारी आँखें तो खोल कर रख दी है। अमर्त्य सेन की एक रिपोर्ट में देखा गया है कि भारत में 3 करोड़ सात लाख लड़कियाँ मिसिंग हैं। यह मिसिंग क्या है? पुत्र मोह में मार दी गई लड़कियों की संख्या है यह। नवरात्रि के पर्व पर कन्यापूजन

करने वाले देश में पड़ोसी की कन्या को बुलाकर भोजन करवाकर देवी की पूजा करने वाले अपनी कोख में बेटी आने पर कन्या भ्रूण हत्या कर देते हैं। 29 राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में शिशु लिंग अनुपात में लगातार गिरावट देखी गई है। अब हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश सब बेटी बचाओ में लगे हैं। पर बेटियाँ बचेंगी तब जब उन्हें उनके मूल अधिकार दिए जायगें। कब तक उसे समानता, आत्म सम्मान और न्याय से वंचित रखा जायगा। हमारी परम्पराओं ने स्त्री का ऐसा समाजीकरण किया है कि अधीनता, परतन्त्रता को वह खुद गहरे तक आत्मसात कर बैठी है। स्वास्थ्य, शिक्षा, राजनीतिक, स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता यहाँ तक की व्यक्तिबोध जैसे मौलिक अधिकारों से भी वह वंचित है।

वह इस समय संक्रमण काल से गुजर रही है। विकासशील देशों की स्त्रियों को न केवल पितृसत्तात्मक सामाजिक अवरोधों का सामना करना पड़ रहा है, बल्कि वे पश्चिम के प्रौद्योगिकीय वर्चस्व का दबाव भी झेल रही हैं।

भारत में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए संसद और कार्यपालिका को देश में कानून का निर्माण और कार्यान्वयन सौंपा गया है जबकि न्यायपालिका इसके निष्पादन को सुरक्षित करती है। अतः समाज के विकास एवं निर्माण के लिए स्त्री–पुरूष की सहभागिता अनिवार्य है। विकास के साथ–साथ नैसर्गिक सिद्धान्त का पालन एवं पर्यावरण संतुलन के लिए नितांत आवश्यक है। जिसके लिए लैंगिक समानता के साथ–साथ महिलाओं की जनसंख्या को पुरूषों के समान बनाये रखने के लिए महिलाओं के अस्तित्व से जुड़े अधिकारों को प्रोत्साहन और संरक्षण अवश्य देना होगा।

इस तरह वैश्वीकरण जहां विकासशील देशों के विकास को सुनिश्चित करता है, वहीं समाज की आर्थिक रूप से गरीब महिलाओं को अधिक उत्पीड़ित करने का प्रयास करता है। इससे महिलाओं का निरंतर उत्पीड़न हुआ है। अतः वैश्वीकरण जहाँ कुछ महिलाओं के लिए लाभदायक सिध्द हुआ है, वहीं कुछ की स्थिति बद से बदतर हो गई है।

वैश्वीकरण का प्रभाव :–

वैश्वीकरण का सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही पक्ष हैं। अन्य समाजों की तरह भारतीय समाज भी पितृसत्तात्मक समाज है जिसमें सांस्कृतिक व धार्मिक आधार पर तो स्त्रियाँ सम्मानित, पूज्यनीय देवी स्वरूप है लेकिन व्यावहारिक धरातल पर महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की है । भारतीय महिलाओं की सामाजिक संरचना में निर्धारित प्रस्थिति के कारण उनमें शिक्षा का अभाव, सामाजिक आर्थिक भौतिक संपदाओं पर उनकी सहभागिता बहुत ही कम होती है। वे न केवल आर्थिक सामाजिक वंचनाओं की शिकार होती हैं वस्तुतः पूरा नारी समाज असमानता व पिछड़ेपन का शिकार है। उनके साथ होने वाले लैंगिक भेदभाव के कारण उनकी हैसियत समाज में निम्न है ।

वर्तमान में विश्व के विकसित और विकासशील देशों में ग्रामीण महिलाएं मूख्य भूमिका अदा कर रही हैं। भारत में उदारीकरण का दौर शुरू होने पर महिलाओं की स्थिति में तेजी से परिवर्तन देखने को मिला। देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के फैलाव ने बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दिया जिनमें महिलाओं की संख्या भी उल्लेखनीय रही। नए प्रौद्योगिकी और शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं के प्रति समाज की सोच में बदलाव लाना शुरू किया उनकी सामाजिक स्थिति के साथ–साथ आर्थिक स्थिति भी मजबूत हुई। आज सरकार और उद्योग पूरे जोर से विदेशी पूंजी निवेश को आकर्षित करने में लगे हैं लेकिन उदारीकरण व ढांचागत समायोजन नीतियों के प्रभाव के अध्ययन के संदर्भ में हमें ध्यान रखना होगा कि भारत एक तीसरी दुनिया का देश है और काफी समय तक उपनिवेश रहा है ।

भारत सरकार की ओर से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए वर्तमान में कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, उनमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय महिला साक्षरता मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार मिशन, राजीव गांधी किशोरी सशक्तिकरण योजना, जननी सुरक्षा योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना शामिल हैं। इसके अलावा महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सरकार ने वर्ष 1990 में एक बड़ा कदम उठाया। इस वर्ष सरकार ने राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की जो महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और उन्हें अपनी भूमिका के प्रति जागरूक करती है।

उदारीकारण के लगभग दो दशकों के बाद भूमंडलीकरण की आंधी ने जहां कुछ प्रतिशत महिलाओं को फायदा पहुंचाने का काम किया उससे कहीं अधिक प्रतिशत महिलाओं को विश्व व्यापार की

शर्तों के थपेड़ो ने उनकी पारंपरिक आजीविका के साधनों को छीनकर उन्हें अर्थव्यवस्था से बाहर करने पर भी मजबूर किया है।

भारतीय महिलाओं पर भूमंडलीकरण का प्रतिकूल असर अधिक नजर आता है। हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था में महिलाओं का सबसे अधिक योगदान कृषि के क्षेत्र में है। यहां अधिकतर खेतिहर कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। महिलाओं का ज्ञान और उनकी निपुणता बीजों की सुरक्षा, खाद्य उत्पादन और फसलों की विविधता और खाद्य प्रोसेसिंग में काम आती है। लेकिन विश्व व्यापार संगठन के समझौते के तहत कृषि पर कारपोरेट जगत का दबदबा बढ़ा है। जो खाद्य सुरक्षा महिलाओं के काम पर निर्भर करती है उसे कारपोरेट संबंधित खाद्य संस्कृति ने पीछे धकेल दिया है।

यह सही है कि ग्लोबलाइजेशन ने अनौपचारिक और असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को रोजगार के असीम अवसर प्रदान किए है। जो महिलाएं परिवार की देखभाल में समय बिताती थीं उन्हें श्रम प्रधान इन इकाइयों में काम करने का अवसर मिला लेकिन इस प्रक्रिया ने महिलाओं से उनके काम के बुनियादी अधिकार छीन लिए। 1990 से शुरू हुए एसएपी (ढांचागत समयोजन) कार्यक्रम के तहत कई विदेशी कंपनियों ने अपने निर्यात उध्योगों जैसे कपड़ा, खेल का सामान, फूड प्रोसेसिंग, खिलौनों की इकाईयों को भारत में खोलकर महिलाओं को सस्ता श्रम मानते हुए उन्हे अधिक से अधिक काम पर रखा। लेकिन असुरक्षित माहौल और दमघोंटू काम की स्थितियों ने महिलाओं को 'गुलाम वेतनभोगी' बनाने का काम अधिक किया। नौकरियां मिलीं लेकिन न तो युनियन बनाने के अधिकार और न ही अपने अधिकारों के खिलाफ लड़ने या आवाज उठाने के अधिकार मिल सके। काम की उचित कल्याणकारी सरकारी नीतियों के अभाव ने इन महिलाओं को बदहाल और गुलाम बनाने वाली कार्य स्थितियों में भी काम करने का आदी बना दिया है।

भारत में महिला विकास एवं महिला सशक्तीकरण के वैश्वीकरण के प्रयत्नों के बावजूद इसका प्रभाव कई क्षेत्रों में नकारात्मक भी रहा है। सर्वप्रथम तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अंतर्गत महिलाओं का वस्तुकरण हो गया है, वे प्रदर्शनी की चीज बनती जा रही हैं। बड़ी–बड़ी कंपनियां अपने व्यापारिक हितों की पूर्ति तथा अपनी सेवाओं और वस्तुओं को बेचने के लिए महिलाओं की योग्यता, क्षमता एवं व्यकितत्व का भरपूर प्रयोग करती हैं। उन्हें बाजारू वस्तु को बेचने का एक लुभावना साधन माना जाता है। इस प्रकार वैश्वीकरण के युग में महिलाओं के वस्तुकरण एवं व्यावसायीकरण को भारतीय समाज में नकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। इस दिशा में राज्य की नियामकीय अभिकरणों से यह अपेक्षा है कि वे कुछ ठोस कदम उठायेंगे।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्वीकरण के युग में भारत में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया गया है ।

जहां तक महिलाओं का प्रश्न है तो भारतीय समाज में वे सदियों से शोषित, दमित, प्रताड़ित एवं सदैव हाशिए पर रही हैं। आज भी महिला आंदोलन महिलाओं को उनकी वास्तविक स्थिति दिलाने के लिए संघर्षरत है। इसमें संदेह नहीं कि वैश्वीकरण के युग में महिलाओं की उन्नति एवं विकास के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं। बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन के माध्यम से महिलाओं को राष्ट्र की सामाजिक–आर्थिक प्रगति में भागीदार बनाये जाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। इस प्रक्रिया के अंतर्गत महिलाओं के अनुकूल भी रोजगार निर्माण किया जा रहा है ताकि योग्य एवं सक्षम महिलाएं राष्ट्र के आर्थिक विकास में समुचित एवं सक्रिय भागीदारी कर सके। आर्थिक प्रणाली में पाश्चात्य मूल्यों की स्वीकृति के कारण कार्य के क्षेत्र में पुरुष एवं महिलाओं में कोई अंतर अब नहीं किया जाता। उनकी सुरक्षा की समुचित गारंटी भी दी जाती है। इससे महिलाएं भयमुक्त भी हुई हैं। आज की महिलाएं ज्यादा स्वतंत्र एवं खुद ज्यादा आत्मनिर्भर महसूस कर रही हैं और विकास की प्रक्रिया में पुरूषों के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर चल रही हैं। इससे उनकी सामाजिक सिथति भी सुदृढ़ हुई है और उन्हें सम्मान एवं प्रतिष्ठा की दृषिट से भी देखा जा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भारतीय महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में व्यापक सुधार हुआ है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने भारत की महिलाओं को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित किया है। जो की भारतीय समाज में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ :

1. Giddens, Anthony,:The Consequences of Modernity. Standford University Press, Standford,1990.
2. मानव अधिकार : अन्तर्राष्ट्रीय प्रपत्रों का संकलन खण्ड–1
3. मानव अधिकार : अंतर्राष्ट्रीय प्रपत्रों का संकलन खण्ड–3
4. Robretson,R. :Globalization, Social Theory and Global Culture,Sage Publication London,1998P.P.170.
5. Reddy, D. Narasimha, "Challenges of Decent Work in the Globalising World," The Indian Journal of Labour Economics , Vol. 48, No. 1, 2005.
6. Papola, T.S., "Globali**Z**ation, Employment and social Protection : Emergine Perspectives for the Indian Workers", The Indian Journal of Labour Economics, Vol. 47, No. 3, 2004.
7. Somayaji, 'Globalization and Family change in India,' in Sakarama Somayajiand Ganesha Somayaji (eds.),Sociology of Globalization : Perspectives from India, Rawat Publications.
8. Sinha, K. and Dutta, P.K.,Globalization and Developing Countries,Indian Centre for International Co-operation,New Delhi India.
9. Pandey,Ravi Prakash: Coclusive Synopsis of International Saminar on Globalization & Poverty;held on 4-6 Dec, 2004,organized by M.G.Kashi Vidya Peeth,Varanasi.2004
10. Nederven Pieterse, J.,Globalization as Hybridisation,International Sociology 1994

Literature and Human Life: A Sempiternal Relation

Dr. Suman Mohan
Asst. Prof. in English,
Pt. D.D.U. Govt. Degree College, Palahipatti, Varanasi

It is rightly said that literature is the mirror of society. On the other hand, society is also influenced by literature. Hence, we find that there is an age long relation between literature and human life. Writers live in the society where they keenly observe the people and their attitude. They communicate their feelings and thoughts through their work. These works of literature provide positive impact on the mind of the people living in the society. The aim of the writers is to portray various aspects of human life in their work in different forms viz. poem, essay, drama, novel etc. Society has gone through tremendous changes since the very beginning of the civilization. With the passage of time values, culture, attitudes of the people have never been the same. It is truly said that literature influences human thought, attitude and action. Hence, literature creates society and society creates literature.

Literature is a binding agent for us to connect with the realities of human life. It makes us more considerate and sensitive. It is a storehouse of knowledge and wisdom. Francis Bacon's essays provide a great deal of practical knowledge of life. His essays convey profound condensed thoughts: "….natural abilities are like natural plants, that need pruning by study; and studies themselves do give forth directions too much at large, except they be bounded in by experience" (Of Studies,1). Bacon speaks of his essays as 'certain brief notes set down rather significantly than curiously; of a kind, where of men shall find much in experience and little in books.'(1) Similarly, Joseph Addison and Richard Steele wrote for "the Spectator" and "The Tatler" in order to bring improvement in the values and attitude of the people. They were involved in the social scene of their time and wrote for the reformation of morals and manners of the people.

G. K. Chesterton has given importance on being old in his essay, "On the Pleasures of No Longer Being Very Young": "….we begin to see significance….to see life, in a large number of traditions, institutions, maxims and code of manners that seem in our first days to be dead…. The advantage of advancing years lies in discovering that traditions are true, and therefore alive…." (1)

Poetry serves the function of relieving stress. It refreshes and provides peace of mind. In the words of William Wordsworth, "Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings; it takes its origin from emotions recollected in tranquility". Inspiration, preaching and spirituality are the treasures we get from the poems of William Wordsworth. "The Solitary Reaper", "Lines written in Tintern Abbey" and "The Prelude" provide us aesthetic pleasure. In the poem, "The World is Too Much with Us", he says the man has become so materialistic, that he ignores Nature. In his poem Three Years She Grew, Wordsworth has described how Nature can bring up a human being in her lap in a pure and natural way:

"And vital feelings of delight
Shall rear her form to stately height,
Her virgin bosom swell
Such thoughts to Lucy I will give." (2)

William Blake has described the poisonous consequences of envy among human beings and he has urged to remove envy from human hearts through his poem, "The Poison Tree". In

his novels, Thomas Hardy has depicted the role of fate and chance in human life. But apart from pessimism, he has shown rays of hope also in his poems like The Darkling Thrush:

"At once a voice arose among
The bleak twigs overhead
In a full-hearted evensong
Of joy illimited" (2)

Life is full of misery and infirmity. Shelly has predicted bright future in his poem "Ode to the West Wind": "If winter comes, can spring be far behind?"(3) Similarly in life full of fret and fever, John Keats has observed positive notes and message in the melodious song of the nightingale.

Alexander Pope used satire in his poems to improve man and society. In "An Essay on Man", he has written:

"Created half to rise and half to fall
Great lord of all things, yet, prey to all."(2)

We are inseparable part of Nature. In spite of knowing this fact we destroy Nature blindly. We realize the importance of Nature only when we are away from it. W. B. Yeats realizes this in his poem, "The Lake Isle of Innisfree. In this modern world we run after materialism. Our culture and values are vanishing. In the poem The Second Coming, he says: "Things fall apart: The centre cannot hold." (3) Modern man does not understand this. He has become emotionless like a machine. "The Love Song of J. Alfred Prufork" by T.S. Eliot explores a modern mind in conflict, cynical and afraid of certainties: "And indeed there will be time." (3)

One more picture of modern man is described by W.H. Auden in his poem, The Unknown Citizen: "Was he free? Was he happy?" (3) The question is absurd. This satirical poem pictures the death of an average citizen, gifted by the state with a social security number. That robes him of his individuality, analysed in detail by Statistics after his death. Hence, literature has thought provoking elements which influence our mind deeply on the issues prevailing in the society.

Literature serves the purpose of inspiration too. It conveys great ideas and thoughts of great people. W. H. Longfellow has written in his poem, "A Psalm of Life":

"Let us then, be up and doing,
With a heart for any fate;
Still achieving, still pursuing,
Learn to labour and to wait."(4)

Literature teaches us how to analyse and understand people in the society. It makes us to study human nature which can be observed in various plays. According to Mathew Arnold in his poem "Shakespeare", William Shakespeare was

"Self schooled, self-scanned,
Self honoured, self secured.
Didst tread on earth unguessed at."(2)

De facto, Shakespeare has given us universal themes and characters in his plays. The writer depicts the picture of society in his work and thus his work gives us better understanding about man and society.

Drama serves the purpose of entertainment and hence, relieves stress. Literature about exposing injustices causes anger and in this way, changes take place in the society. It inspires people to take action for the desired change. Problem plays like "Strife" by John Galsworthy exposes capital class exploiting the labour class. Similarly, Dystopic literature encourages the

reader to bring improvement in the society. On the other hand, utopian literature helps to inspire people to bring perfection in the society. Thomas Moore has presented a perfect and ideal society in his "Utopia".

Fiction provides us experience of the writer which he has depicted in his novels. Dickens has satirised ill effects of industrialization, child labour etc. of the Victorian England society. He has portrayed the deplorable picture of society in order to bring positive change. The Illiad, the Oddyssey, the Ramayan, the Mahabharat are the real pictures of the society. Mulk Raj Anand has painted deplorable picture of the untouchables in his novel "Untouchable". Sudha Murthy has depicted various kinds of problems of common people in her collection of stories, "Dollar Bahu". These experiences of the writers stir our mind and we 'feel' that certainly there is need of 'change'. Hence, literature has a very significant role in human life.

In the late 1800's, equality of men and women was a common theme of the writers. Women's rights and roles in home and society were dealt with great care. Actually their voices were disregarded and unheard. They were considered as 'weaker' sex. Then, in twentieth century feminism came in full force. G. B. Shaw presented 'new woman' in his plays like "Candida", "Arms and the Man" etc. T. S. Eliot highlighted the hollow and confused condition of modern man. He has described the barrenness of the world in his play "The Wasteland". The novels of Chetan Bhagat are seen on the film screens. New gender sensitization has become a burning issue which is dealt by Mahesh Dattani in his plays. Plight of hizra community is depicted in his "Seven Steps around the Fire": "we cannot speak…when we want to speak nobody listens…even God does not listen to us."(5)

Hence, literature has always been a part of human life. Different authors have taken different themes in their work depicting the condition of human being and giving various kinds of feeds and feedbacks to them. Much of the literature is based on the time when it was written. People in the society play a very big role in how a piece of work turns out. Literature connects people with the facts and traditions in the society. It broadens the horizon. It gives rays of hope in the darkness. Literature makes us more sensitive and considerate. It provides us a gateway to understand and express the life experiences. Literature removes our mental sickness and develops thinking skills. Thus, it serves the function of both instruction and recreation.

REFERENCES:

1. Sinha, Susanta K.(ed.), English Essayists, Oxford University Press, New Delhi,1987
2. Green, David(ed.),The Winged Word, An Anthology of Poems for Degree Courses, Macmillan, India Ltd.1974
3. English Verse Selections, Part II Tennyson to Larkin, ed. by Dept. of English & Modern European Languages, University of Allahabad ,O.U.P., India, 2001
4. Mishra,N.K. & Mukherjee N.(ed.), The Loom of Language, An Anthology of Prose & Poetry, Delhi, India,1979
5. Dattani, Mahesh, Seven Steps Around the Fire, Delhi, India, 2016 (2nd Reprint), p 29, 50